भजन

वक्त कितना कठिन ये आया है कैसे हालात बनते जाते हैं
सुख सागर पिया रूहों के लिए, दर्द पे दर्द सहते जाते हैं

1) साथ दुःख में दुःखी हुआ सो हुआ, दर्द कुछ आपको भी कम तो नहीं
कौन सा दुःख यहाँ बचा ऐसा, जिसको आपने सहा ही नहीं
त्न बदल कर के बार–बार यहां, गहरे सागर में खुद उतरते हैं।

2) देवचन्द्र जी के तन में जब आए, बरस चालीस गुज़ारे कसनी में
तारतम का खजाना ला के दिया,सो भी खातिर इन अपनी रूहों से
अर्श में जो सुभान अपने हैं, साथ के मिलन को यूँ तरसते हैं

3)श्री मेहेराज जी के तन मे पिया,अनगिनत दुख गले लगाये हैं.
अपने दुःख सुख से बेखबर होकर, साथ चरणों तले छिपाये हैं
माया तिलसम से वो बचा करके, अर्श निसबत निभाते जाते हैं.

4) जिस तन को भी तुमने अपनाया एक पल भी तो चैन ना पाया
जग के ताने सहें मगर कोई, लब –पे शिकवा नजर नहीं आया
निज घर के वो शहनशाह मेरे, ऐसी लीला ही क्यों रचाते हैं।